IJAER/September-October 2024/Volume-13/Issue-4 ISSN: 2278-9677
International Journal of Arts & Education Research
(Peer-Reviewed, Open Access, Fully Refereed International Journal) Impact Factor:7.06

प्रशासन : एक कला के रूप में

डॉ. संगीता
एसोसिएट प्रोफेसर
देव समाज कॉलेज फॉर वूमेन
फिरोजपुर

भूमिका

किसी भी देश की कला के आंतरिक या बाह्य विकास के लिए तत्कालीन परिस्थिति एवं काल अनुकूल होना चाहिए। सामाजिक व्यवस्था, आर्थिक सम्पन्नता, राजनैतिक गतिविधियाँ, सुख–समृद्धि एवं मानवीय मूल्य कला के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। समाज द्वारा कला को दिया जाने वाला प्रोत्साहन ही कलाकार की प्रेरणा का आधार होता है। दूसरी ओर, कला भी रूचि–परिष्कार द्वारा सम्पूर्ण समाज के नैतिक उत्थान का माध्यम बन, संस्कृति का परिष्कार भी करती है। कला के प्रचार व प्रसार में समाज की प्रशासन व्यवस्था का विशेष योगदान रहता है क्योंकि प्रशासन ही वह तंत्र है जो कला, कलाकार एवं कला–प्रेमी के मध्य सेतु का कार्य करते हुए, विभिन्न प्रकार की सहायता देकर, कला के विकास का मार्ग प्रशस्त करता है। किसी भी राष्ट्र की नीतियों एवं योजनाओं के निर्धारण में प्रशासन–तन्त्र को प्रमुख स्थान दिया जाता है। इतिहास साक्षी है कि विभिन्न कालों में संगीत के विकास की धारा को प्रवाहमान या अवरूद्ध करने में प्रशासन–तंत्र की भूमिका सदैव से ही प्रमुख रही है।

मुख्य शब्द – प्रशासन, संगीत, समाज, कला, गतिविधि, संस्कृति, विज्ञान ।

अर्थ

प्रशासन को एक कला मानने के कारणों की चर्चा से पूर्व, यह आवश्यक है कि 'प्रशासन' शब्द का अर्थ जाना जाए। 'प्रशासन' शब्द 'शास् धातु में 'प्र' उपसर्ग लगकर बना है। अँग्रेजी में इसे 'ऐडमिनिस्ट्रेशन' (Administration) कहते हैं । यह शब्द मूलतः लैटिन भाषा के दो शब्दों 'Ad+Ministrare' से मिलकर बना है, जिसका अर्थ है – व्यवस्था करना, व्यक्तियों की देखभाल करना अथवा कार्यों की व्यवस्था करना ।

'Encyclopaedic Dictionary of Art, Literature and Science' के अनुसार :

In its general sense, administration means the conduct or management of any affair, but in this country, the term is usually applied to the management of the public or national affairs by the government which is thence called the administration.

परिभाषा

प्रशासन शब्द को अनेक विद्वानों ने विभिन्न प्रकार से परिभाषित करते हुए, इसे कार्यों के प्रबन्ध अथवा उनको पूर्ण करने की एक क्रिया, चैतन्य उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए एक संगठित प्रयत्न और साधनों का निश्चित प्रयोग कहा है। मनुष्य ही सम्पूर्ण प्रशासकीय व्यवस्था का संचालक, स्रोत, आधार और मार्ग–निर्माता है। सम्पूर्ण देश के विकास का दायित्त्व कुशल प्रशासन पर निर्भर करता है। इसके बिना देश में सांस्कृतिक, सामाजिक एवं आर्थिक उन्नति का होना सम्भव नहीं है।

पुरातनता

आधुनिक युग में, प्रशासन समाज का एक आवश्यक अंग और शाश्वत आवश्यकता बन गया है। मानव एक सामाजिक प्राणी है, इसलिए मानव समाज में विभिन्न गतिविधियों के संचालन एवं प्रबन्धन हेतु एक कुशल संगठन की आवश्यकता होती है। मानव समाज की इस आवश्यकता की पूर्ति प्रशासन द्वारा होती है। प्रशासन शब्द का सम्बन्ध 'मानव–सहयोग'

से माना गया है। मनुष्य स्वभाव से ही सहयोग प्रिय है, इसलिए अपने जिन कार्यों में वह दूसरे व्यक्ति के साथ रहकर कार्य करता है, उसे प्रशासन की संज्ञा दी जा सकती है। इस दृष्टि से प्रशासन उतना ही प्राचीन है, जितनी कि मानव–सभ्यता। जब से मनुष्य ने साथ रहना सीखा, तब से ही प्रशासन का जन्म माना जा सकता है। प्राचीन प्रशासकीय सफलता की आश्चर्यजनक उपलब्धियों में रोमन साम्राज्य की व्यवस्था तथा मिस्र के पिरामिडों के नाम सहज ग्राह्य हैं।

प्रषासन एवं कला

'भारतीय संगीत जगत् में मुख्य रूप से 64 कलाएँ मानी गई हैं जैसे–गायन वादन वाद्य, नृत्य, नाट्य, आलेख्य, काव्य (चित्रकारी) पुष्पास्तरण, शयन–रचना इत्यादि । परन्तु आज के परिवर्तित परिवेश में, कतिपय अन्य विशिष्ट कार्यों अथवा क्रियाओं को भी कला की श्रेणी में सम्मिलित किया जाना समीचीन होगा। इसी सन्दर्भ में 'प्रशासन' को भी एक कला के रूप में माना जा सकता है।

संगीत एवं अन्य ललित कलाओं के विकास में समाज एवं प्रशासन की महत्त्वपूर्ण भूमिका रहती है। समाज अपने रीति–रिवाजों, धार्मिक उत्सवों, सामाजिक पर्वों द्वारा कला के विकास हेतु सतत्–प्रयत्नशील रहता है, जबकि कला को जीवित रखने हेतु कलाकारों को पर्याप्त प्रोत्साहन की आवश्यकता होती है। समाज को भी कला के विकास के लिए धनाढ्य व्यक्तियों, औद्योगिक संस्थानों एवं प्रशासन पर निर्भर होती है, वह कला उन्नति एवं विकास की पराकाष्ठा को प्राप्त करती है। उदाहरण के तौर पर, अकबर के युग में संगीत को पर्याप्त प्रोत्साहन मिला, जिसके कारण वह काल संगीत के इतिहास का 'स्वर्णयुग' कहलाया, जबकि उपलब्ध प्रमाणों के आधार पर, औंरगज़ेब ने व्यक्तिगत रूप से संगीत का प्रेमी होने पर भी कालान्तर में धर्मान्धता एवं कट्टरपंथिता का उदाहरण देते हुए, संगीत के प्रति वितृष्णा का भाव अपनाया, जिसके कारण उसके शासनकाल में अनेकानेक संगीतज्ञों एवं कला–प्रेमियों को शाही दरबार छोड़कर, तत्कालीन राजपूत शासकों की शरण में जाना पड़ा। प्रशासन द्वारा कलाकारों का सम्मान कला का ही सम्मान माना गया, क्योंकि पुरस्कार प्राप्ति के पश्चात् कलाकार द्विगुणित रूप से उत्साहित होकर, कला के विकास एवं परिमार्जन में संलग्न हो जाता था और श्रेष्ठ शिष्यों एवं नए ग्रन्थों की रचना में लीन हो जाता था।

'प्रशासन' को कला की श्रेणी में रखना युक्तिसंगत् होगा, क्योंकि कला जीवन का वह क्षेत्र है, जिसके प्रयोग से जीवन में सुन्दरता व उपयोगिता का समावेश होता है । कोई कार्य किस विधि से किया जाता है–यह कला के क्षेत्र में आता है। मनुष्य को कला ईश्वर–प्रदत्त प्रतिभा के रूप में प्राप्त तो होती है, परन्तु कुछ ग्रहण करने की इच्छा और चेष्टा से, कलागत तकनीकों को सीखकर, उनमें दक्षता प्राप्त कर कला को जिस प्रकार निखारा जा सकता है, ठीक उसी प्रकार प्रशासन की कला को भी परिष्कृत एवं परिमार्जित रूप प्रदान किया जा सकता है। अतीत काल से ही, प्रशासन को एक कला के रूप में मान्यता प्राप्त है। कौटिल्य, अकबर, शेरशाह सूरी, बिस्मार्क, सरदार पटेल – जैसे प्रतिभाशाली शासकों ने अपनी प्रशासनिक कुशलता का परिचय दिया, जिससे प्रशासक–जगत ने उन्हें महान् कलाकारों की श्रेणी में रखा, क्योंकि उपलब्ध सामाजिक एवं मानवीय साधनों के द्वारा, सामूहिक जीवन को एक विशेष रीति से निर्माण करने वाला, उसे सुन्दर, सुखमय एवं कल्याणकारी स्वरूप प्रदान करने वाला, एक कलाकार ही माना जा सकता है। जिस तरह एक कलाकार, कवि या चित्रकार कला के माध्यम से अपनी अभिव्यक्ति करता है, उसी प्रकार एक प्रशासक भी प्रशासन के माध्यम से अपनी अभिव्यक्ति करता है। प्रशासन एक ऐसी कला है, जिसका प्रेरणा–स्रोत अन्य कलाओं की भाँति ही अन्तःकरण होता है । साहित्य, संगीत आदि कलाएँ अधिकांशतः अमूर्त, अस्थायी, एकांगी और समसामयिक होती हैं, जबकि प्रशासन ठोस एवं मूर्त रूप से जीवन को अधिक सुन्दर, अधिक आकर्षक तथा अधिक विकासमान बनाने का प्रयत्न करता है। इसी सन्दर्भ में विद्वज्जनों के निम्न कथन द्रष्टव्य हैं :

ऑर्डवे टीड के अनुसार :

यदि मिट्टी अथवा रंगों से बनी 'कलाकृति' है, यदि स्वरों के आपसी संगुम्फन के उतार–चढ़ाव को 'संगीत' कहते हैं, यदि शब्दों और भावों के संचयन का नाम 'साहित्य' है और ये सभी ललित कलाएँ हैं, तो हमें उस श्रम को भी ललित कला की संज्ञा देने का पूर्ण अधिकार है, जो व्यवस्था सम्बन्धी क्षेत्र को, सार्थक ढंग से व्यक्तियों और अलग–अलग समूहों के निकट लाता है।

चार्ल्स वर्थ के अनुसार :

प्रशासन, इसलिए कला है, क्योंकि उसके संचालन के लिए अत्यधिक कुशल नेतृत्व, उत्साह तथा उच्च आस्थाओं की आवश्यकता होती है।

ग्लैडन के अनुसार

प्रशासन एक सुस्पष्ट क्रिया है, जिसके निष्पादन के लिए विशिष्ट ज्ञान और तकनीक अपेक्षित है। प्रशासन, चाहे वह सार्वजनिक हो, चाहे निजी, दोनों का ही सम्बन्ध कुछ कार्यों के करने से है और इस प्रकार वह निःसंदेह एक कला है।

ड्वाईट बैल्डो के अनुसार

"Let it be recalled that an art requires a medium for its expression, And in this case of administration, the medium seems to be threefold. Its full expression takes place in and through organization, Human beings and cultural setting democratic society."

संगीतकला, चित्रकला, मूर्तिकला आदि अन्य कलाओं की भाँति प्रशासन की कला को भी सीखा जा सकता है। प्रत्येक कला की तरह प्रशासन भी व्यक्ति के जीवन को अधिक सुखद व अधिक सुन्दर बनाना चाहता है, अर्थात् वह भी सत्यम् शिवम् और सुन्दरम् की साधना है। इसके लिए भी कठिन साधना की आवश्यकता होती है।

प्रशासन को कला की संज्ञा प्रदान करने वाले पाँच तथ्य :

1. जिस प्रकार कलाकार जन्मजात होते हैं और उनकी प्रतिभा प्राकृतिक रूप से ही दिशा – विशेष की ओर मुड़ती है, उसी प्रकार प्रशासक भी जन्मजात होते हैं। प्रशासन के नियम चाहे कितने ही कठिन क्यों न हों, यह एक ऐसी कला है, जिसे कुछ लोग औरों की अपेक्षा अधिक श्रेष्ठता से सम्पादित करते हैं।

2. जिस प्रकार कला में सत्यम, शिवम् और सुन्दरम् की अभिव्यक्ति होती है, उसी प्रकार प्रशासन की दुनियाँ 'सत्य' है, तो उसके उद्देश्य 'शिव' (कल्याणकारी) हैं और उसकी तकनीक का 'सौन्दर्य' उसे कलात्मकता प्रदान करता है।

3. प्रत्येक कला में एक सृजनात्मक अभिव्यक्ति होती है। कला निर्माण है, सृजन है और सृजन द्वारा उदात्त वृत्तियों का परितोष कही जा सकती है। इसी प्रकार, प्रशासक का सुख भी एक कलाकार का सुख है, जिसे अपने कार्य से वैसा ही सन्तोष प्राप्त होता है, जैसा कि एक कलाकार को अपनी कला को देखकर प्राप्त होता है।

4. जिस तरह कला में अमूर्त में मूर्त रूप की अभिव्यक्ति होती है, उसी प्रकार प्रशासन भी अमूर्त सिद्धान्त और व्यवहार की सामाजिक दुनियाँ के बीच पाई जाने वाली स्थिति से सम्बद्ध है। यह व्यवहार से सिद्धान्त बनाता है और सिद्धान्त को व्यवहार लागू करता है।

5. प्रत्येक कला का अपना एक माध्यम, एक साधन होता है। जैसे–संगीत का साधन स्वर, चित्रकला का साधन रंग, साहित्य के साधन शब्द तथा भाव हैं, ठीक उसी प्रकार प्रशासन के भी साधन होते हैं :

(अ) प्रशासन स्वयं को संगठन द्वारा व्यक्त करता है।

(ब) तत्पश्चात् वह स्वयं को संगठन के उद्देश्यों द्वारा प्रकट करता है। जिस प्रकार प्रत्येक व्यक्ति, प्रत्येक कलाकार के संगीत, चित्रकला, शिल्पकला आदि शैलियों और स्वरूपों में परस्पर भिन्नता होती है, उसी प्रकार प्रशासन की शैलियों और स्वरूपों में भी भिन्नता पाई जाती है।

इस प्रकार, प्रशासन को कला की संज्ञा देना न तो असंगति है और न ही अतिश्योक्ति। जब तक वह मानव–जीवन से सम्बन्धित क्षेत्र है, तब तक उसकी कलात्मकता किसी न किसी रूप में विद्यमान रहेगी।

कतिपय विद्वान् प्रशासन को कला और विज्ञान दोनों ही मानते हैं, क्योंकि कोई भी कला ऐसी नहीं है, जिसका कोई वैज्ञानिक नियम न हो। इस प्रकार बड़े–से–बड़े वैज्ञानिक को भी एक कलाकार सिद्ध किया जा सकता है। जैसे– ताजमहल, न केवल स्थापत्य कला का एक श्रेष्ठतम उदाहरण है, अपितु वह अभियान्त्रिकी विज्ञान (Architecture Engineering) का भी एक चमत्कार है। अपोलो–14 का चन्द्रमा पर जाना न केवल एक वैज्ञानिक उपलब्धि है, अपितु उसे वहाँ तक ले जाने वाले चन्द्रयात्री वैज्ञानिक की अपेक्षा कलाकार अधिक हैं। एक संगीतकार को भी संगीत के स्वरों का अनुशासन वैज्ञानिक ढंग से सीखना पड़ता है। दूसरे शब्दों में, पकवान – विशेष में प्रयोग किए जाने वाले मसालों का अनुपात उसका विज्ञान है, परन्तु उसकी स्वादिष्टता, बनाने वाले की व्यक्तिगत पाककला–क्षमता पर निर्भर करती है। संगीत में तानें एक विशिष्ट क्रम से गाए जाने पर मधुरतम संगीत उत्पन्न करती हैं। यह क्रम का सिद्धान्त इस विषय का विज्ञान है, जबकि हारमोनियम वादन एक कला ।

तकनीक–प्रयोग

संगीतकला में जिस तरह उत्तम तकनीकों, यथा मींड, कण, गमक, मुर्की, खटका, जमजमा इत्यादि के प्रयोग द्वारा कला को सुन्दर एवं आकर्षक रूप प्रदान किया जाता है, उसी प्रकार प्रशासन में भी उत्कृष्ट तकनीकों का प्रयोग किया जाता है।

प्रसिद्ध विद्वान् लूथर गुलिक ने इन तकनीकों का सारांश POSDCORB के रूप में दिया है, जिसका हर अक्षर एक तकनीक का सूचक है–

P - Planning - योजना बनाना
O - Organizing – संगठित करना
S - Staffing – कर्मचारी वर्ग की नियुक्ति
D - Directing – निर्देशन करना
O - Co-Ordinating – समन्वय करना
R - Reporting – प्रतिवेदन करना
B - Budgeting – आय–व्यय प्रपत्र बनाना

उपर्युक्त तकनीकों के यथानुकूल प्रयोग द्वारा प्रशासन की कला को निखारा जा सकता है। अन्य कलाओं की ही भाँति, साधना एवं जिज्ञासा न केवल कला के लिए, अपितु प्रशासन के लिए भी अनिवार्य हैं। प्रशासन अतीत काल से ही एक कला रूप में सर्वमान्य एवं प्रयोग में लाया जाता रहा है, अतः वर्तमान काल में उसका कलाओं की श्रेणी में समाविष्ट किया जाना अनुचित न होगा क्योंकि प्रशासन एवं कला– दोनों का ही उद्देश्य मनुष्य के जीवन को प्रसन्नतायुक्त, सुखमय एवं कल्याणकारी बनाना है।

सन्दर्भ पुस्तक सूची

1. सालिगराम निगम : लोक प्रशासन के सिद्धान्त, किताब महल, इलाहाबाद, 1971
2. डॉ. वीरेन्द्र शर्मा : लोक प्रशासन, श्री पब्लिशिंग हाऊस, नई दिल्ली, 1988
3. विष्णु भगवान, विद्या भूषण : लोकप्रशासन, एस.चन्द एण्ड कम्पनी लिमिटेड, नई दिल्ली, 1988

4. लक्ष्मी दत्त ठाकुर : लोकप्रशासन के आवश्यक तत्त्व, उत्तरप्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, लखनऊ, 1972
5. चन्द्र प्रकाश भाम्भरी : लोक प्रशासन, जय प्रकाश नाथ एण्ड कम्पनी, मेरठ, 1986
6. डॉ. महादेव प्रसाद शर्मा : लोकप्रशासन : सिद्धान्त एवं व्यवहार, किताब महल, इलाहाबाद, 1980
7. डॉ. परमात्मा शरण, भारत में लोक प्रशासन, मीनाक्षी प्रकाशन, मेरठ, 1978
8. एस.सी. मेहता : लोक प्रशासन : सिद्धान्त एवं व्यवहार, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, 1989
9. चन्द्रा पटनी : राजनीति और प्रशासन, कॉलेज बुक डिपो, जयपुर, 1985

checked on 10-10-2024